Detailed Report of One-Day National Symposium on Indian Knowledge System and NEP 2020

Government Degree College Chail-Koti, in collaboration with GDC Theog and GDC Sunni, organized a one-day national symposium on *Navigating Knowledge: A Critical Perspective on Indian Knowledge System and Integration in NEP 2020* on 16 May 2025 at GDC Chail-Koti. The event witnessed the participation from nearly 80 scholars, researchers, and teachers from various parts of Himachal Pradesh. The symposium commenced with the ceremonial lightening of the lamp, garlanding of the statue of goddess Sarswati, and enchanting of Sarswati Vandana. Following this, Dr Deepshikha Bhardwaj, the principle of GDC Chail-Koti, formally welcomed the invited speakers and guests and felicitated them by presenting famous Himchali scarves, topi, and bouquet. In her welcome address, Dr Deepshikha introduced the participants to the theme of the symposium and highliged its objectives, relevance, and significance in the context of the National Education Policy (NEP) 2020. She further added that it is vital for the teachers and educators to understand the

nuances of Indian Knowledge System before the formal adoption of NEP in the colleges of Himachal Pradesh. She expressed the hope that this national symposium will play a significantly constructive role in familiarize the participants with the Indian knowledge system.

The key-note address was delivered by Dr OP Sharma, a fellow at Indian Institute of Advanced Study, Shimla. In his discourse, Dr OP Sharma defined Indian knowledge system and emphasized its value. He underlined that the classical Indian texts such as Vedas, Upanishads, epics, particularly Ramayana and Mahabharata, are rich sources of knowledge and should be incorporated into the undergraduate syllabi of the colleges in Himachal Pradesh. He further illustrated that the knowledge and theories discussed in classical Indian texts are relevant to the contemporary world as they provide us solution to the problems such as environmental pollution, mental health and stress management. Besides, they provide the theories significant to modern art, literate, history,

mathematics, geography, and both astronomy and astrology. In his speech, he stressed the importance of cultural pride and the need to preserve and promote India's cultural heritage.

After the opening address, the pre-lunch plenary session started. This session was chaired by Dr Vinay Mohan Sharma, Associate Professor of English at GDC Theog and Prof. Vishal Rangta of GDC Sanjouli was rapporteur. In this session, the invited speaker Prof. BK Shivram of Himachal Pradesh University Shimla, provided a comprehensive outline of the NEP 2020 and explained the reasons why it needs to be implemented. He offered key insights into the implementation of NEP 2020 and discussed university's preparation for this. He spoke about the curriculum design and credit system for undergraduate classes. Similar to previous speakers, he underscored the imperative of revitalizing the Indian knowledge tradition and integrating it into the contemporary educational framework, with due consideration to both local and global paradigms. Elaborating on the strengths of the NEP, he added that the policy is acclaimed for fostering the holistic development of the

learners and equipping them with adaptive skills essential to survive in increasingly globalized world.The session was concluded after an open discussion.

In post-lunch plenary session, the invited speaker, Prof. Raj Kumar of Himachal Pradesh University, Shimla, delved into the multifaceted dimensions of Indian knowledge system and highlighted its intellectual richness and enduring relevance. He illuminated the diverse schools of Indian philosophical thought and strongly advocated for their systematic integration into the evolving curriculum under NEP 2020.He underscored the imperative to revisit indigenous epistemologies. He argued that their inclusion will not only preserve cultural heritage but also offer critical perspectives for addressing contemporary global challenges. Prof. Kumar further emphasized the potential of Indian knowledge tradition to contribute meaningfully to global academic discourse and urged educational institutions, such as schools, colleges and universities, to promote on international platform.

Following Prof. Kumar, Dr Ram Lal Sharma explored the various dimensions of the NEP 2020 and talked about the challenges that the Government colleges of Himachal Pradesh may face while implementing this policy. He highliged the strengths of classical education system and stressed the need for the decolonization of the minds to re-assimilate this system. He emphasized the need for multidisciplinary and interdisciplinary research system to enable students to get employment. Dr Neeraj Sharma was the chairman and Dr Satyanarayan Senhi was the rapporteur of this session.

Finally, in his valedictory speech,Dr Bhupinder Sing Thakur, Principal GDC Theog, summarized the proceedings of symposium and tanked the participants. Dr Anjali Chauhan, Principal GDC Sunni delivered the vote of thanks.

चायल कोटी कॉलेज में हुई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर चर्चा

बाबू राम चौहान, जुन्गा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेशन विषय पर राजकीय महाविद्यालय चायल कोटी में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें स्थानीय डिग्री कॉलेज के अतिरिक्त अटल बिहारी वाजपेयी राजकीय महाविद्यालय सुन्नी एवं राजकीय महाविद्यालय ठियोग ने संयुक्त रूप से भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ कॉलेज की प्राचार्या डॉ. दीपशिखा भारद्वाज ने किया। उन्होंने भारतीय ज्ञान परम्परा के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि यह संगोष्ठी शिक्षक वर्ग के लिए काफी लाभदायक सिद्ध होगी। उन्होंने संगोष्ठी में आए सभी विद्वतजनों एवं अन्य महाविद्यालयों से आए प्रतिभागियों का स्वागत किया।

उन्होंने बताया कि इस संगोष्ठी में मुख्य वक्ताओं के रूप में प्रदेशभर से विद्वान आमंत्रित किए गए थे। प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के संस्कृत विद्वान डॉ. ओम प्रकाश शर्मा में मुख्य वक्ता रहे। इन्होंने भारत की महान ज्ञान परंपरा पर विस्तार से प्रकाश डाला। दूसरे सत्र में एचपीयू के डीन ऑफ स्टडीज डॉ. बीके शिवराम ने नई (राष्ट्रीय) शिक्षा नीति से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की और बताया कि विवि सभी कॉलेजों को साथ लेकर इस नीति को लागू करने के लिए अपनी पूरी तैयारियां कर चुका है। (अनंत ज्ञान)

बनाने और दूसरों को भी इसके और जागरूकता से परिपूर्ण बढ़ावा देना है।

अधिकारी व पार्टी कार्यकर्ता इस अवसर

आयोजन डिग्री कॉलेज चायल कोटी में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर किया मंथन

स्टाफ रिपोर्टर-शिमला

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेशन विषय पर राजकीय महाविद्यालय चायल-कोटी में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया, जिसमें स्थानीय डिग्री कॉलेज के अतिरिक्त अटल बिहारी वाजपेयी राजकीय महाविद्यालय सुन्नी एवं राजकीय महाविद्यालय ठियोग ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ कॉलेज की प्राचार्या डाक्टर दीपशिखा भारद्वाज ने किया। उन्होने भारतीय ज्ञान पम्परा के महत्तव पर प्रकाश डाला और कहा कि यह संगोष्ठी शिक्षक वर्ग के लिए लाभदायक सिद्ध होगी। उन्होने संगोष्ठी में आए सभी विद्वतजनों एवं अन्य महाविद्यालयों से आए प्रतिभागियों का स्वागत किया। संगोष्ठी चार सत्रों में आयोजित की गई। प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के संस्कृत विद्वान डाक्टर ओम प्रकाश शर्मा में मुख्य वक्ता रहे। दूसरे सत्र में हिप्र विश्वविद्यालय के डीन ऑफ स्टडीज डाक्टर बीके शिवराम ने नई (राष्ट्रीय) शिक्षा नीति से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। उन्होंने इन नई नीति के तहत बने विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रमों पर भी प्रकाश डाला तदोपरांत सत्र में मुख्य वक्तां के रूप में डाक्टर राजकुमार, प्रोफेसर महान रिसर्चर,

वाणिज्य विभाग, हिप्र विश्वविद्यालय ने भारतीय ज्ञान परंपरा की महत्ता को स्थापित करते हुए पाश्चात्य दर्शनशास्त्र का उल्लेख भी किया। डार्तक आरएल शर्मा ने नई शिक्षा नीति को समीक्षात्मक दृष्टि से सामने रखा, जिसके अंतर्गत उन्होंने अनेक ऐसी चुनौतियों को उजागर किया जिनका यह नीति लागू करने से पहले हल किया जाना जरूरी है। अंतिम सत्र में ठियोग महाविद्यालय के प्राचार्य डाक्टर भूपेंद्र सिंह ने भी अपने विचार रखे। सुन्नी कॉलेज की प्राचार्या प्रो. अंजली चौहान ने सभी वक्ताओं एवं वहां उपस्थित सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।

सहयोग का परिणाम है।

चायल कोटी में राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर मंथन

संवाद सूत्र, जागरण • जुन्गा : राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेशन विषय पर राजकीय महाविद्यालय चायल कोटी एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी करवाई गई। इसमें स्थानीय डिग्री कालेज के अतिरिक्त अटल बिहारी वाजपेयी राजकीय महाविद्यालय सुन्नी एवं राजकीय महाविद्यालय ठियोग ने भी हिस्सा लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ कालेज की प्राचार्य डा. दीपशिखा भारद्वाज ने किया। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि यह संगोष्ठी शिक्षकों के लिए काफी लाभदायक सिद्ध होगी। उन्होंने संगोष्ठी में आए विद्वानों एवं अन्य महाविद्यालयों से आए प्रतिभागियों का स्वागत किया।

संगोष्ठी में प्रदेश भर से वक्ताओं को आमंत्रित किया गया था। संगोष्ठी चार सत्र में हुई। प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला के संस्कृत विद्वान डा. ओमप्रकाश शर्मा ने भारत की ज्ञान परंपरा पर विस्तार से प्रकाश डाला। दूसरे सत्र में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के डीन आफ स्टडीज डा. बीके शिवराम ने नई (राष्ट्रीय) शिक्षा नीति से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय सभी महाविद्यालयों को साथ लेकर इस नीति को लागू करने के लिए अपनी तैयारी कर चुका है। डा. आरएल शर्मा ने नई (राष्ट्रीय) शिक्षा नीति को समीक्षात्मक दृष्टि से सामने रखा।